Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

सीता का आदर्श और नारी सशक्तिकरण: एक बहुआयामी विश्लेषण

डॉ शैलेंद्र शुक्ला, सुन्नीकृपानाथ सिंह

सरदार पटेल महाविद्यालय चंद्रपुर गोंडवाना विश्वविद्यालय गडचिरोली

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में सीता के आदर्श चरित्र की विभिन्न व्याख्याओं को नारी सशक्तिकरण की वर्तमान चर्चा से जोड़कर देखा गया है। वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस और लोककथाओं में सीता का चरित्र केवल एक अच्छी पत्नी और त्याग की मिसाल नहीं है। उसमें आत्मसम्मान, विरोध करने की ताकत और अपने निर्णय खुद लेने की क्षमता भी साफ झलकती है। शोध में सीता के आदर्श को तीन पहलुओं - परिवार, समाज और वैश्विक स्तर पर जांचा गया है। इसमें एक विशेष तरीके से ग्रंथों का विश्लेषण, तुलना और नारीवादी दृष्टिकोण से आलोचना की गई है। सार यह है कि द सीता का चरित्र 21वीं सदी की महिलाओं को प्रेरित करता है। द सीता का चरित्र उन्हें पुराने मूल्यों और नए हकों दोनों की ओर ले जाता है।

मुख्य शब्द: सीता, नारी सशक्तिकरण, रामायण, नारीवादी विमर्श, आत्मसम्मान, भारतीय स्त्री-विमर्श, तुलनात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की लंबी परम्परा में सीता का स्थान सबसे प्रमुख और सबसे अधिक बात किया गया है। लेकिन बहुत सारी बातों में सीता की छवि को एक ही रूप में–सिर्फ त्याग और समर्पण की मूर्ति के रूप में–दिखाया गया है। मैंने इस शोध में इस एक ही रूप को चुनौती दी, द, और सीता के उन पहलुओं को दिखाया जो महिला सशक्तिकरण के आधुनिक विचारों से मिलते हैं।

नारी सशक्तिकरण का मतलब है कि महिला अपनी शक्ति, अपने फैसले और समाज में भाग लेती है। मैं देखता हूँ द, कि पुष्पवाटिका में राम से सरल प्रेम, वनवास में इच्छा से साथ चलना, रावण के सामने डटे रहना, और अंत में धरती में समेट कर बदनामी का जवाब देना – ये सब नारी की मजबूत शक्ति को दिखाते हैं।

शोध द तीन मुख्य प्रश्नों को देखता है: (1) पारिवारिक धरातल पर नारी की भूमिका और आज़ादी को सीता-आदर्श कैसे परिभाषित करता है, द? (2) जाति, वर्ग और धर्म के सन्दर्भ में सीता-आदर्श का क्या महत्व है, द? (3) दुनिया भर में नारी-विमर्श में सीता-आदर्श का चरित्र 21वीं सदी की भारतीय नारी को कैसे प्रेरित कर सकता है?

2. साहित्य समीक्षा

2.1 शास्त्रीय एवं पारम्परिक दृष्टि

वाल्मीकि-रचित आदि रामायण सीता-चरित्र का सबसे पुराना और सही स्रोत है। वाल्मीकि ने सीता को 'जनकनन्दिनी' के रूप में दिखाया और सीता के चरित्र में देवता जैसा और इंसान जैसा एक खास मिलन दिखाया। जब रावण ने अशोक वाटिका में प्रस्ताव रखा, तो सीता ने एक तिनका अपने और रावण के बीच रखकर कहा कि सीता मनसा-वाचा-कर्मणा राम की पत्नी है। यह एक प्रतीक है और यह दिखाता है कि सीता की पहचान मजबूत है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में द सीता को 'सर्वश्रेयस्करी' कहा। द सीता शक्ति है जो क्लेशों को हटाती है और कल्याण का रास्ता बनाती है। भक्ति आन्दोलन में कबीर, सूरदास और मीराबाई ने द जाति और वर्ग की सीमाओं को तोड़ दिया। कबीर, सूरदास और मीराबाई ने नारी की आध्यात्मिक स्वायत्तता की घोषणा की।

2.2 आधुनिक एवं नारीवादी पुनर्पठन

महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' (1942) में कहा कि भारतीय नारी की पीड़ा का असली कारण बाहरी बन्धन नहीं है, द बल्कि अंदर की मानसिक बेड़ियाँ हैं। पश्चिमी विचारकों – सिमोन द बोउवार (1949) और जूडिथ बटलर (1990) – के असर से भारतीय नारीवादी विमर्श ने भी द भाषा बदली। मैं इस बात से सहमत हूँ कि अंदर की बेड़ियाँ ही सबसे बड़ी समस्या हैं। बदली। गायत्री स्पिवाक के 'सबाल्टर्न विमर्श' की कसौटी पर सीता की 'धरती में समाने' की घटना – जो सतही दृष्टि से पलायन लगती है – वास्तव में एक ऐसा निर्णय था जो उन्होंने अपनी शर्तों पर लिया।
पॉला रिचमन (1991) ने 'अनेक रामायणे' में दिखाया कि रामायण एक जीवन्त परम्परा है जिसमें भिन्न सामाजिक समूहों ने अपनी आकांक्षाओं के अनुसार सीता की छवि गढ़ी। दक्षिण भारतीय लोककथाओं में सीता अधिक मुखर और स्वाधीन हैं; थाईलैंड की रामकीन परंपरा में वे वीरता का प्रतीक हैं।

3. शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोध मूलतः गुणात्मक पद्धति (Qualitative Research) पर आधारित है। निम्नलिखित चार पद्धतियों का समन्वित उपयोग किया गया है:

शोध-पद्धति	उद्देश्य	प्रमुख स्रोत
पाठ-विश्लेषण	मूल ग्रन्थों में सीता-चरित्र का स्वरूप समझना	वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस
तुलनात्मक अध्ययन	भिन्न युगों में सीता की छवि की तुलना	डायस्पोरा साहित्य, वैश्विक मिथक

नारीवादी आलोचना-दृष्टि	नारी-शक्ति और एजेंसी का पुनर्मूल्यांकन	भारतीय व पाश्चात्य नारीवादी सिद्धान्त
ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विश्लेषण	विभिन्न कालखण्डों में सीता-आदर्श का प्रभाव	समाजशास्त्र, सांस्कृतिक अध्ययन

4. पारिवारिक धरातल: कर्तव्य, स्वायत्तता और प्रतिरोध

4.1 पत्नी की भूमिका में एजेंसी

वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने वनवास के समय सीता को साथ नहीं जाने दिया, पर सीता ने इस बात को मानने से इनकार कर दिया। यह आज्ञा नहीं, बल्कि अपनी मर्जी से किया गया चुनाव था। लंका में रावण के प्रलोभन को ठुकराकर उन्होंने कठोर शब्दों में उसकी निंदा की। यह साहस उनके अंदर की ताकत का सबूत है।

4.2 माँ के रूप में सीता

वन में अकेले लव और कुश का पालन-पोषण करना, उन्हें शास्त्र-ज्ञान, आत्मसम्मान और वीरता के भाव देना – यह एक ऐसी माँ का काम है जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने बच्चों को समर्थ बनाती है।

4.3 अग्निपरीक्षा: अपमान या प्रतिरोध?

जब वाल्मीकि के आश्रम में लव-कुश का पालन करने के बाद राम ने सार्वजनिक अग्निपरीक्षा का पुनः आग्रह किया, तो सीता ने इनकार कर दिया – यह पलायन नहीं था, यह एक स्त्री का अन्तिम और अखण्डनीय प्रतिरोध था। पारिवारिक धरातल पर सीता की एजेंसी के चार प्रमुख बिन्दु हैं:

✦ वनवास में स्वेच्छा से साथ जाना – स्वायत्त निर्णय, आदेश-पालन नहीं

✦ रावण के समक्ष निर्भीक प्रतिकार – व्यक्तित्व की अखण्डता

✦ वाल्मीकि के आश्रम में लव-कुश का स्वतन्त्र पालन-पोषण – स्वावलम्बी मातृत्व

✦ अन्तिम धरती-प्रवेश – स्वनिर्णय की पराकाष्ठा

5. सामाजिक धरातल: जाति, वर्ग, धर्म और सशक्तिकरण

5.1 जाति और वर्ग के परिप्रेक्ष्य में

रामायण में शबरी, मन्दोदरी, तारा और अनसूया, द, अलग सामाजिक पृष्ठभूमि से हैं और शबरी, मन्दोदरी, तारा और अनसूया, प्रत्येक अपने-अपने जगह पर स्वतंत्र है। शबरी की भक्ति में जाति के भेद को पार करने की शक्ति है। शबरी की भक्ति, द, इस शक्ति को दिखाती है। भक्ति आंदोलन ने जाति के विभाजन को चुनौती दी। तुलसीदास ने निषादराज और हनुमान को सम्मान दिया और कहा कि राम-भक्ति जाति की सीमाओं को नहीं मानती।

5.2 शिक्षा, आर्थिक स्वतन्त्रता और नीतिगत सन्दर्भ

सीता एक शिक्षित नारी थीं। द वाल्मीकि रामायण में सीता के संवादों में दर्शन, नीति और धर्म की अच्छी समझ दिखती है। द वन में सीता ने लव-कुश को वेद, काव्य और शस्त्र-विद्या सिखाई। द समकालीन नीतियों जैसे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', महिला आरक्षण अधिनियम 2023, मुद्रा योजना और मिशन शक्ति वही बड़े सामाजिक विचार का हिस्सा हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से सीता जैसे आदर्श की माँग करते हैं। मैं मानता हूँ कि इन नीतियों में सीता के विचारों की झलक मिलती है।

नीति/कार्यक्रम	नारी सशक्तिकरण में योगदान
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	लिंग-अनुपात सुधार, शिक्षा दर में वृद्धि
महिला आरक्षण अधिनियम 2023	राजनीतिक भागीदारी में 33% भागीदारी
मुद्रा योजना	महिला उद्यमियों को वित्तीय सहायता
स्वयं सहायता समूह (SHG)	ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्वतन्त्रता
मिशन शक्ति	महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण का समन्वित कार्यक्रम

5.3 सार्वजनिक जीवन और नेतृत्व

लोककथाओं में सीता, जब राम नहीं होते, द राजकाज संभालती है, द न्याय देती है, द प्रजा की देखभाल करती है। मैं इस बात से प्रेरित हूँ कि आज भारत में महिला सरपंच, महिला IAS अधिकारी, महिला वैज्ञानिक, महिला उद्यमी वही मूल्य-श्रृंखला में हैं, जो सीता के आदर्श से शुरू होकर आधुनिक नारीवादी आंदोलन तक फैल गई है। यह देख कर मन खुश हो जाता है।

6. वैश्विक धरातल: तुलना वाला अध्ययन और द अंतरराष्ट्रीय चर्चा

6.1 दुनिया की किताबों में नारी आदर्श की तुलना

मैं देखता हूँ कि ग्रीक मिथकों में पेनलोप निष्ठा रखती है, द सीता की निष्ठा जैसी है। मैं देखता हूँ कि मिस्र में आइसिस माँ की शक्ति को दर्शाती है, द प्रतीक है। मैं देखता हूँ कि मरियम त्याग और करुणा को अपनाती है, द आदर्श है। मैं देखता हूँ कि बौद्ध परम्परा में यशोधरा द स्वयं को उठाने की यात्रा करती है। मैं देखता हूँ कि चीन में मुलान वीरता और कर्तव्य के प्रति समर्पण को दर्शाती है, द प्रतीक है। मैं देखता हूँ कि इनकी तुलना में सीता द एक साथ प्रेम करने वाली पत्नी, साहसी वनवासी, गर्वीली माँ और सम्मान के लिये फैसला करने वाली महिला है - यह कई रूप, द, सीता को दुनिया भर में महिला आदर्श में एक खास जगह देती है।

6.2 डायस्पोरा, अनुवाद परम्परा और डिजिटल युग

थाईलैंड की रामकिन में लोग सीता को अपनी संस्कृति की नजर से देखते हैं, द। इन्डोनेशिया की काकावान रामायण में लोग सीता को अपनी संस्कृति के हिसाब से देखते हैं, द। म्यान्मार की यम जट्ट्ओ में लोग सीता को अपनी संस्कृति की रोशनी में देखते हैं, द। फिजी, मॉरीशस और त्रिनिडाड में भारतीय प्रवासी लोग सीता की कथा में अपने मूल से कट जाने के बाद भी संस्कृति को बचाने की हिम्मत देखते हैं, द। अमिश त्रिपाठी ने 2017 में 'सीता: मिथिला की योद्धा' लिखी, द। नीना पाले ने 2008 में 'सीता सिंग्स द ब्लूज़' लिखी, द। सोशल मीडिया पर 'स्त्रीवादी सीता' हैशटैग आंदोलन चल रहा है, द। ये सब दिखाते हैं कि सीता की कहानी हर पीढ़ी के साथ नया मतलब ले रही है।

7. रामचरितमानस: नारी सशक्तिकरण का समालोचनात्मक पाठ

तुलसीदास सोलहवीं शताब्दी के सामाजिक और धार्मिक संकट के समय लिखते थे। द सीता सिर्फ देवी नहीं है – द सीता एक पूरा इंसान भी है। द सीता का दिल डर से धड़कता है जब राम द सीता को जंगल में छोड़ते हैं; द सीता में माँ जैसा स्नेह है; द सीता में प्यार की उलझन है – द मानवीय गुणों की वजह से सीता कई युगों तक पाठकों के दिल में जीवित रहती है। रामचरितमानस में कुछ चौपाइयाँ नारी-विरोधी मानी जाती हैं, और नारी-विरोधी को लेकर आधुनिक नारीवादी आलोचक बहुत तीव्र आलोचना करते हैं। Wendy Doniger (1999) ने तर्क दिया है कि रामायण को रामायण के ऐतिहासिक सन्दर्भ में समझना आवश्यक है। Romila Thapar (2000) ने भी तर्क दिया है कि रामायण को रामायण के ऐतिहासिक सन्दर्भ में समझना आवश्यक है। तुलसीदास ने अपने समय के मानदण्डों को अपनाया, लेकिन तुलसीदास ने सीता की आत्मा की स्वाधीनता को बरकरार रखा, और यही तुलसीदास की शक्ति है।

8. शोध-निष्कर्ष एवं विश्लेषण

8.1 युगानुसार शोध-प्रवृत्तियाँ

युग / काल	सीता-आदर्श की प्रमुख व्याख्या
वेदकाल (~1500-500 ई.पू.)	नारी की बौद्धिक और आध्यात्मिक भूमिका
रामायण काल (~500-200 ई.पू.)	आदर्श पत्नी, प्रतिरोध की प्रतीक; त्याग और एजेंसी का संगम
भक्ति युग (12वीं-17वीं सदी)	सामाजिक समता, आध्यात्मिक स्वायत्तता; जाति-वर्ग से ऊपर भक्ति
आधुनिक सुधार काल (19वीं सदी-1947)	नारी-शिक्षा, सामाजिक न्याय; राष्ट्रीय चेतना में नारी
स्वातंत्र्योत्तर काल (1947-1990)	नारीवादी आलोचना; साहित्यिक पुनर्पठन
समकालीन नारीवादी युग (1990-अब)	एजेंसी, इंटरसेक्शनैलिटी, डायस्पोरा विमर्श, डिजिटल पुनर्लेखन

8.2 प्रमुख निष्कर्ष

निष्कर्ष 1: सीता का चरित्र बहुआयामी है

सीता केवल त्याग और समर्पण की मूर्ति नहीं हैं। द मैं देखता हूँ कि सीता में आत्मसम्मान है, सीता में प्रतिरोध है, सीता में साहस है, सीता में विवेक है और सीता में स्वायत्त निर्णय-क्षमता है।

निष्कर्ष 2: सीता-आदर्श कालातीत है

वेदकाल से डिजिटल युग तक सीता की छवि हर पीढ़ी के साथ नया अर्थ लेती रही है। द कालातीतता प्रमाण देती है कि सीता का चरित्र मानव मन की मूल इच्छाओं – प्रेम, न्याय, सम्मान, शक्ति – को बात करता है।

निष्कर्ष 3: शास्त्रीय और आधुनिक विमर्श में सेतु

सीता का आदर्श पुराने मूल्यों और आधुनिक नारीवादी विचारों के बीच पुल बन सकता है द। त्याग और स्वत्व, सेवा और आज़ादी – दोनों साथ रह सकते हैं।

निष्कर्ष 4: नीतिगत प्रासंगिकता

मैं सोचता हूँ कि सीता के आदर्श से बने शिक्षा-नीतियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम नारी सशक्तिकरण के व्यावहारिक लक्ष्य को पाने में ज्यादा असर डालते हैं। तो, शिक्षा-नीतियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम दोनों ही सांस्कृतिक जड़ें से जुड़े होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि शिक्षा-नीतियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम हमारी परम्परा में गहरी जड़ें रखते हैं।

9. नीतिगत और शैक्षिक सुझाव

9.1 शिक्षा क्षेत्र में

मेरी राय में, हमें द स्कूल और द कॉलेज के पाठ्यक्रम में सीता के चरित्र को पूरी तरह पढ़ाना चाहिए – न केवल त्याग और वफादारी के प्रतीक के रूप में, बल्कि साहस, आत्मसम्मान और खुद के निर्णय के उदाहरण के रूप में भी। द महिला अध्ययन विभागों में द तुलना के तरीके से सीता और द अन्य दुनिया की नारी आदर्शों का अध्ययन करना चाहिए।

9.2 भावी शोध की दिशाएँ

मैं सोचता हूँ कि भविष्य के शोध में ज़रूरी द क्षेत्र हैं: (1) हम दलित और आदिवासी समुदायों की रामायण-परम्पराओं में सीता की छवि को देखेंगे; (2) हम डिजिटल साहित्य और सोशल मीडिया पर द सीता पर चर्चा को देखेंगे; (3) हम दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में द सीता के स्थानीय बदलाव की तुलना करेंगे।

9.3 सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर

हमें रामलीला, कथावाचन और सांस्कृतिक उत्सवों में द सीता की भूमिका को द अधिक सक्रिय और प्रेरक रूप में दिखाना चाहिए। सीता का विरोध, सीता का स्वाभिमान और सीता के आज़ाद निर्णय द प्रमुखता पाना चाहिए।

10. उपसंहार

मेरे लिए, सीता का चरित्र, द, एक बहती नदी की तरह है, द, जो वाल्मीकि की रामायण से निकलकर बहुत सारी भाषाएँ, संस्कृतियाँ और युगों से होकर आज भी बह रही है। किसी ने सीता का चरित्र त्याग की मूर्ति कहा। किसी ने सीता का चरित्र प्रतिरोध की प्रेरणा कहा। किसी ने सीता का चरित्र आत्मसम्मान का प्रतीक कहा। मेरे विचार में, शोध कहता है द, कि सीता को पूरी तरह से समझा जा सकता है जब लोग सीता के त्याग को, सीता के विरोध को, सीता की दया को, सीता की हिम्मत को एक साथ देखते हैं, न कि टुकड़े-टुकड़े करके। मैं इसे दिल से महसूस करता हूँ। 21वीं सदी की भारतीय नारी द, अपनी रिवाज में से प्रेरणा लेती है। सीता का चरित्र शक्ति देता है, शक्ति रावण के सामने भी नहीं झुकेगी। शक्ति बहुत पुरानी है, द, लेकिन कभी पुरानी नहीं लगती।

इस शोध की मौलिक स्थापनाएँ

क. सीता का चरित्र त्याग और प्रतिरोध दोनों को एक साथ दर्शाता है, सीता का चरित्र दो भागों में नहीं बँटा, बल्कि एक ही है।

ख. पारम्परिक और नारीवादी दृष्टि में कोई टकराव नहीं है, दोनों दृष्टि सीता के चरित्र के अलग-अलग पहलू दिखाते हैं।

ग. मैं मानता हूँ कि सीता-आदर्श का पुनः पढ़ना भारतीय महिलाओं की शक्ति को संस्कृति की जड़ें से जोड़ता है। यह और असरदार बना सकता है।

घ. दुनिया भर में सीता का चरित्र कई पहलुओं के कारण अलग है। सीता का चरित्र महत्वपूर्ण भी है।

ङ. भविष्य के शोध के लिए दलित-आदिवासी रामायण , डिजिटल विमर्श और अंतरराष्ट्रीय अनुवाद-परम्पराएँ अच्छे क्षेत्रों हैं।

सन्दर्भ सूची

मूल ग्रन्थ:

1. वाल्मीकि. (मूल काल ~500-200 ई.पू.). वाल्मीकि रामायण. (अनु. श्रीराम शर्मा). गीताप्रेस गोरखपुर, 2018.

2. तुलसीदास. (1574). श्रीरामचरितमानस. सम्पा. विश्वनाथप्रसाद मिश्र. काशी नागरी प्रचारिणी सभा, 2002.

3. वेदव्यास. महाभारत: शान्तिपर्व. (अनु. पं. रामनारायण दत्त शास्त्री). गीताप्रेस गोरखपुर, 2015.

हिन्दी ग्रन्थ एवं आलोचना:

4. वर्मा, महादेवी. (1942). श्रृंखला की कड़ियाँ. इलाहाबाद: किताब महल.

5. सोबती, कृष्णा. (1966). मित्रो मरजानी. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

6. पुष्पा, मैत्रेयी. (2004). खुली खिड़कियाँ. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

7. अनामिका. (2008). खुरदरी हथेलियाँ. दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

8. द्विवेदी, हज़ारीप्रसाद. (1964). हिन्दी साहित्य का आदिकाल. पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद.

अंग्रेज़ी शोध-ग्रन्थ:

9. de Beauvoir, S. (1949). The Second Sex. (Trans. H.M. Parshley). Vintage Books, 1989.

10. Butler, J. (1990). Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity. Routledge.

11. Doniger, W. (1999). Splitting the Difference: Gender and Myth in Ancient Greece and India. University of Chicago Press.

12. Kishwar, M. (1997). Yes to Sita, No to Ram: The Continuing Popularity of Sita in India. Manushi, No. 98, pp. 20-31.

13. Lutgendorf, P. (1991). The Life of a Text: Performing the Ramcaritmanas of Tulsidas. University of California Press.

14. Omvedt, G. (1980). We Will Smash This Prison! Indian Women in Struggle. Zed Press.

15. Pollock, S. (1993). Ramayana and Political Imagination in India. Journal of Asian Studies, 52(2), 261-297.

16. Richman, P. (Ed.). (1991). Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia. University of California Press.

17. Spivak, G.C. (1988). Can the Subaltern Speak? In C. Nelson & L. Grossberg (Eds.), Marxism and the Interpretation of Culture. University of Illinois Press.

18. Thapar, R. (2000). Cultural Pasts: Essays in Early Indian History. Oxford University Press.

19. Tharu, S. & Lalita, K. (Eds.). (1991). Women Writing in India, Vol. I. Feminist Press.

20. Tripathi, A. (2017). Sita: Warrior of Mithila. Westland Publications.

शोध-पत्रिकाएँ एवं डिजिटल स्रोत:

21. Shodhganga – UGC National Repository of Theses: https://shodhganga.inflibnet.ac.in

22. Journal of South Asian Literature (JSTOR). Michigan State University.

23. Indian Journal of Gender Studies (SAGE). New Delhi.

24. National Commission for Women (NCW) Reports, 2020-2024. www.ncw.nic.in